27 AUG 2019

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-XIV/VI (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/19(N-M)-HL-**HL14/6**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Firoj Alam

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं?

हाँ	✓	नहीं	

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): (6) 27/08/19

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2019] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2019]:

0	8	3	3	1	2	9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Firoj

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित काव्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) बिलग जनि मानहु, ऊधो प्यारे।

वह मथुरा काजर की कोठरि जे आवहिं ते कारे।।

तुम कारे, सुफलकसुत कारे, कारे मधुप भँवारे।

तिनके संग अधिक छबि उपजत, कमलनैन मनिआरे।।

मानहु नील माट तें काढ़े लै जमुना ज्यों पखारे।

ता गुन स्याम भई कालिंदी सूर स्याम गुन न्यारे।।

'आचार्य रामचंद्र शुक्ल' द्वारा संकलित 'भ्रमरगीतसार' में 'सूरदास' ने उपालंभ व वाग्विदग्धता के माध्यम से विरहिणी गोपियों की विरह वेदना को प्रस्तुत किया है।

निर्गुण, योगी व ज्ञानमार्गी उद्धव को उलाहना देती हुई गोपियाँ कहती हैं कि मथुरा काजल की कोठरी है क्योंकि जो भी वहाँ से आता है वह काला रंग ही धारण करके आता है।

उदाहरण देते हुए कहती हैं कि तुम भी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

काले हैं, सुमलक के पुत्र व श्री कृष्ण जी भी काले हैं और तुम सभी का सम्बंध मथुरा से रहा है।

आगे कहती हैं कि श्री कृष्ण के गुणों के कारण कालिन्दी नदी भी काली हो गई है।

सौंदर्य

1 भाषा – ब्रज भाषा।

2 अलंकार – विप्रलंभ शृंगार

3 रस – उत्प्रेक्षा, यमक।

विशेष:-

① गाँव-शहर के द्वन्द्व में नागार्जुन, मुक्तिबोध की तरह सूरदास भी शहर पर व्यंग्य कर रहे हैं।

② प्राकृतिक उपादानों का उद्दीपन भाव से प्रयोग।

③ अन्य भी सूर ने उपालंभ का प्रयोग किया है, जैसे-

'नंद ब्रज लीजे ठोकी बजाय' (यशोदा)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) सोइ रावन कहुँ बनी सहाई। अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई।।
अवसर जानि बिभीषनु आवा। भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा।।
पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन। बोला बचन पाइ अनुसासन।।
जौं कृपाल पूँछिहु मोहिं बाता। मति अनुरूप कहौं हित ताता।।
जो आपन चाहै कल्याना। सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना।।
सो पर नारि लिलार गोसाईं। तजउ चउथि के चंद कि नाईं।।
चौदह भुवन एक पति होई। भूतद्रोह तिष्टइ नहिं सोई।।
गुन सागर नागर नर जोऊ। अलप लोभ भल कहइ न कोऊ।।
दोहा: काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत।।

कविकुल शिरोमणि 'तुलसीदास' द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के 'सुंदरकाण्ड' से उद्धृत ये पंक्तियाँ विभीषण के द्वारा अपने भ्राता रावण से कही गई हैं।

हनुमान जी द्वारा लंका दहन के बाद रावण अपनी मंत्रीगणों से सुझाव माँग रहा था तभी विभीषण आए तथा भ्राता रावण को आदर से नीति अनुसार राम की भक्ति का सुझाव दिया।

विभीषण कहते हैं परनारी पर दृष्टि रखना पाप है तथा चौदह भुवनों का

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

स्वामी भी यदि अकारण दुख देता है तो उसका भी विनाश निश्चित है।

आगे कहते हैं कि काम, क्रोध, मद लोभ आदि ये सभी नरक के रास्ते हैं यदि कल्याण चाहते हो तो राम जी की शरण में जाओ।

सौंदर्य

1. भाषा - तत्समी प्रधान अवधी भाषा।
2. रस - भक्ति रस।
3. अलंकार - ~~अलंक~~ यमक, रूपक, उत्प्रेक्षा।
4. छंद - दोहा व चौपाई की कड़ीबद्ध शैली।

विशेष

(1) उपर्युक्त वर्णित नीतियाँ वर्तमान समाज कल्याण हेतु भी आवश्यक हैं।

(2) विभीषण आगे भी राम-लक्ष्मण से संवाद में नीति अनुसार बातें करते दिखते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) दसरत्थ के दानि-सिरोमनि राम, पुरान प्रसिद्ध सुन्यो जसु मैं।
नरनाग सुरासुर जाचक जो तुम सों मनभावत पायो न कैं।
'तुलसी' कर जोरि करै बिनती जो कृपा करि दीनदयाल सुनैं।
जेहि देह सनेह न रावरे सों अस देह धराइ कै जाय जियैं।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

तुलसीदास कृत 'कवितावली के उत्तरकाण्ड' से उद्धृत इन पंक्तियों में राम के कृपालु व दानवीर रूप का वर्णन किया गया है।

दशरथ के पुत्र राम दानी हैं अर्थात् भक्तों की इच्छाओं के अनुसार कल्याण करते हैं। यह बात वेदों, पुराणों में भी कही गई है।

मनुष्य, सुर-असुर हो या जड़-चेतन जो भी हो तुमसे मन के अनुसार माँगकर पा सकता है।

आगे तुलसी हाथ जोड़ कर राम जी से बिनती करते हैं कि मेरे

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ऊपर भी अपनी कृपा दृष्टि करो। इस शरीर में आपकी ही प्रीति बनी रहे।

सौंदर्य

1. भाषा - ब्रज भाषा।
2. अलंकार - अनुप्रास, उपमा।
3. रस - भक्ति रस।
4. छंद - सवैया छंद।

विशेष

① सूर की तरह सख्य भाव से भक्ति के स्थान पर तुलसी ने दैन्य भक्ति की है।

② तुलसी ने संवेदना विस्तार कर मनुष्यों के साथ-साथ अन्य प्राणियों को भी शामिल किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) नहिं परागु, नहिं मधुर मधु नहिं विकासु इहिं काल।
अली, कली ही सौं बंध्यौं, आगै कौन हवाल।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

बिहारी समाहार क्षमता के कारण दोहे में पूरी कहानी कह देते हैं तथा उनके दोहों के अन्योक्ति विधान के कारण अन्य अर्थ भी निकलते हैं।

यहाँ बिहारी सीधे तौर पर तो कली व भौंरे के माध्यम से अपनी बात कह रहे हैं कि जिस कली का अभी विकास नहीं हुआ है तथा जिसमें मधुर रस भी नहीं है लेकिन भँवरा अभी से उस कली पर मोहित हो रहा है।

लेकिन इस दोहे के माध्यम से बिहारी राजा जयसिंह को सचेत कर रहे हैं कि नायिका ने अभी यौवन रूप ग्रहण नहीं किया है और

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

तुम सभी राजकृत्यों से विमुख होकर नायिका में ही आसक्त हो अर्थात जब नायिका यौवन रूप धारण करेगी तब तुम्हारा क्या हाल होगा?

सौंदर्य

1. भाषा – परिष्कृत ब्रज भाषा।
2. छंद – दोहा।
3. रस – संयोग शृंगार।

विश्लेषण

① "गागर में सागर" वाली कहावत इस दोहे में चरितार्थ हुई है।

② सश्लिष्ट बिम्ब विधान द्रष्टव्य है।

③ रीतिकाल के अनुसार बिहारी ने देहमूलक शृंगार का वर्णन अधिक किया है लेकिन यहाँ उनका नीति ज्ञान दृश्य है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) संसार में कविता अनेकों क्रांतियाँ है कर चुकी,
मुरझे मनों में वेग की विद्युत्प्रभाएँ भर चुकी।
है अन्ध-सा अन्तर्जगत कवि-रूप सविता के बिना,
सद्भाव जीवित रह नहीं सकते सु-कविता के बिना।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'भारत-भारती' में नवजागरण चेतना के अनुसार अतीत की महानता, वर्तमान की दुर्दशा तथा भविष्य के शुभ संकेत दिए गए हैं।

यहाँ कवि ने कवियों के कार्यों का विश्लेषण प्रस्तुत किया है। संसार में अनेक क्रांतियाँ कवियों द्वारा उत्साह, साहस, वीरता के गुणों को जगाने के कारण ही संभव हो सकी हैं।

कविता के दीपक के बिना मनुष्य व संसार अंधकारमय है तथा

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संसार में सद्भाव, भाईचारे तथा सद्गुणों का प्रसार कविताओं के माध्यम से ही संभव है।

सौंदर्य :

① भाषा - तत्सम्बहुला खड़ी बोली।

② छंद - हरिगीतिका छंद।

③ अलंकार - उत्प्रेक्षा।

विशेष

① गुप्त जी 'तुकान्तता' का निर्वाह सभी कविताओं में करते हैं। यहाँ भी दृष्टव्य है।

② अन्य छंद में गुप्त जी ने सीलोन कवि के माध्यम से हुई क्रांति का आह्वान किया है।

③ गुप्त जी कवियों को सम्बोधित करते हुए अन्य भी कहते हैं कि -
"केवल मनोरंजन ही न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उपदेश का भी उचित मर्म होना चाहिए।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) "पीड़ित, शोषित, अपमानित जनमानस के दुःख से जितना सरोकार कबीर का है, उतना भक्तिकाल के किसी अन्य कवि का नहीं।" इस कथन की मीमांसा कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

भक्तिकाल के दौरान सामंतवाद का युग था, जिसमें धार्मिक-जातीय तथा आर्थिक-सामाजिक असमानताएँ स्पष्ट रूप से विद्यमान थे।

इस सामंती दौर में सर्वाधिक निम्न वर्ग, निम्न वर्ण पीड़ित, शोषित व अपमानित महसूस कर रहा था। भक्तिकाल के सूर व जायसी कवियों ने प्रेम व विरह पर लेखनी चलायी परंतु पीड़ित-शोषित व अपमानित जनमानस के दुखों को काव्य में ज्यादा स्थान नहीं दिया। सूर के काव्य में 'कैसे निबहे अंधाधुंध सरकार' जैसे कुछ पद सामान्य जनमानस से जुड़ते हैं पर वे बहुत कम हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तुलसीदास ने जरूर कुछ आर्थिक सामाजिक विषमताओं का चित्रण करके जनमानस के दुखों को उठाया है, जैसे -

"खेती न किसान को, भिखारी को न भीख बलि बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी।"

परंतु भक्तिकाल में कबीर ने अपने काव्य में सर्वाधिक स्थान पीड़ित, शोषित, अपमानित जनमानस के दुःखों को व्यक्त करने के लिए दिया है।

जातिव्यवस्था ने लोगों के शोषण को बढ़ा दिया था तथा निम्न जातियों को अपमान व हेय दृष्टि से देखा जाता था। इस शोषण पर कबीर ने चोट करते हुए कहा-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"जाति-पाति न पूछु कोई
हरि को भजे सो हरि का होई"

ऐसे ही शासकों ने लोगों के शोषण को स्थायी बना दिया था तथा पण्डित लोग शास्त्रों के माध्यम से लोगों को पीड़ित व अपमानित करते थे। कबीर ने शास्त्रों से जनमानस को पीड़ित होने से बचाने के लिए कहा -

"पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ, पण्डित भया न कोई
ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पण्डित होय।"

भक्तिकाल के सामंती दौर में साम्प्रदायिक टकराहट से भी सामान्य जन पीड़ित था तथा साम्प्रदायिक रूढ़ियों को सर्वाधिक निम्न वर्ग को झेलना

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पड़ता था। साम्प्रदायिकता पर चोट करते हुए कबीर कहते हैं—

"अरे इन दोउन राह न पाई
हिन्दुअन की हिन्दुआई देखी, तुरकन की तुरकाई"

सामंती दौर में सामाजिक असमानता भाषा में भी दिखती है तथा शोषितों के प्रति अपमानित भाषा का प्रयोग किया जाता है। कबीर कठोर भाषा पर पीड़ितों के दुख को समझते हुए कहते हैं कि—

"ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोए
औरन को शीतल करे, आप भी शीतल होए"

इस प्रकार कबीर का काव्य भक्तिकाल के अन्य कवियों की अपेक्षा पीड़ित, शोषित व अपमानित जनमानस के दुखों से अधिक सरोकार करता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राष्ट्रीय-स्वाधीनता-आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में 'राम की शक्तिपूजा' पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

'राम की शक्ति पूजा' संश्लिष्ट संवेदना की कविता है। इसका एक पक्ष राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम को व्यक्त करता है।

वर्ष 1936 ई० में यह रचना लिखी गई। यह वही दौर था जब असहयोग व सविनय अवज्ञा आंदोलन असफल हो चुके थे तथा क्रांतिकारी आतंकवाद के प्रथम चरण की असफलता के बाद दूसरे चरण को भी कुछ खास सफलताएँ नहीं मिल रही थीं।

नेहरु, सुभाष तथा लोकनायक गांधी जैसे राष्ट्रीय नेताओं को कोई

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सद्मार्ग राष्ट्रीय स्वाधीनता का नजर नहीं आ रहा था तथा ब्रिटिश साम्राज्यवाद का कहर बढ़ता जा रहा था।

राम की शक्ति पूजा की शुरुआत 'रवि हुआ अस्त' से हुई है अर्थात् राष्ट्रीय स्वाधीनता के सभी उपाय असफल हो चुके हैं।

गांधी सफलता के प्रति शंका से घिर गए हैं। गांधी के प्रतीकात्मक चरित्र 'राम' को भी आशंका में दिखाया गया है। 'फिर शंकाकुल हुए नयन।'

हनुमान जी क्रांतिकारियों के प्रतीक हैं परंतु उन पर आवेग का नियंत्रण नहीं है इसलिए क्रांतिकारी भी असफल हो गए हैं।

शक्ति स्वयं ब्रिटिश सरकार

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

के पास है जो कि अन्याय का प्रतीक है। कविता में भी शक्ति को रावण के पक्ष में दिखाया गया है।

सीता की मुक्ति यहाँ राष्ट्रीय स्वाधीनता के रूप में है तथा सभी मार्गों की असफलता के बाद नए उपायों की खोज के लिए जिस प्रकार कांग्रेस - समाजवादी - साम्यवादी सभा आयोजित करते थे वैसे ही सानु सभा को दिखाया गया है।

राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए 'शक्ति की मौलिक कल्पना' करनी होगी जिसमें गांधी जी राम की तरह आँख निकालने के लिए 'करो या मरो' तक का नारा देंगे। ऐसा गांधी जी ने भारत छोड़ो आंदोलन में किया भी था।

इसलिए समग्रतः कहा जा सकता है कि इस कविता में राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन की सूक्ष्म अभिव्यक्ति हुई है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'सूर को उपमा देने की झक सी चढ़ जाती है और वे उपमा पर उपमा, उत्प्रेक्षा पर उत्प्रेक्षा कहते चले जाते हैं।'- इस कथन को ध्यान में रखते हुए सूरदास की अलंकार-योजना पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यह कथन सूर काव्य में प्रयुक्त दुरु उपमा व उत्प्रेक्षा अलंकारों की अधिकता को देखते दुरु आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा कहा गया है।

ध्यातव्य है कि सूर ने आलम्बन विभाव के लिए कृष्ण, गोपियों व राधा को ही चुना तथा उद्दीपन विभाव के लिए यमुना व मधुबन ही उपस्थित है। भाव के लिए भी वे केवल शृंगार व वत्सल्य को ही व्यक्त करते हैं।

उनके काव्य भाव व विभाव के सीमित होने के कारण तथा नित्य पद रचने के कारण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपमाओं व उत्प्रेक्षाओं में दोहराव आ गया है। फिर भी उनके अलंकार प्रयोग की श्रेष्ठता को देखकर कहा जा सकता है - 'सूर ने बंद आँखों से जैसे अलंकारों का प्रयोग किया अन्य कवि खुली आँखों से भी नहीं कर पाए।'

सूर ने अर्थालंकार व शब्दालंकार दोनों का प्रयोग किया, हालाँकि शब्दालंकार सीमित मात्रा में ही हैं- जैसे-

लोचनु जल कागद मसि, मिलके हुए स्याम स्याम की पाति।
(यमक अलंकार)

सूर ने अर्थालंकारों का अधिक प्रयोग किया। अर्थालंकारों में भी सूर ने उपमा व उत्प्रेक्षा को अधिक महत्व दिया, जैसे-

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

"मेरो मन अनंत कहाँ सुख पावै
जैसे उड़ी जहाज को पंछी फिर जहाज पर आवै"

(उत्प्रेक्षा अलंकार)

सूरदास की अलंकार योजना की तारीफ हजारीप्रसाद द्विवेदी ने भी की है, वे कहते हैं— "जब सूर काव्य रचना करने चलते हैं तो उपमाओं की बाढ़ आ जाती है तथा अलंकारशास्त्र हाथ जोड़कर उनके पीछे पीछे चलता प्रतीत होता है।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'राम की शक्तिपूजा' में निहित द्वंद्वात्मकता का उद्घाटन करते हुए उसके महत्त्व का निरूपण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

राम की शक्ति पूजा में घटनाओं व चरित्रों के स्तर पर पर्याप्त द्वंद्वात्मकता विद्यमान है।

'रवि हुआ अस्त' से प्रारम्भ हुई रचना की शुरुआत की 18 पंक्तियों में राम की सेना हार रही है। सानु सभा के दौरान अचानक राम के हृदय में सीता की स्मृति जाग उठती है तथा विश्वविजय भावना भर आती है।

लेकिन इसके तुरंत बाद ही राम को भीमा की मूर्ति दिखायी देती है, जिसने रावण को अंक में किया हुआ है। इससे राम की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

"मेरो मन अनंत कहाँ सुख पावै
जैसे उड़ी जहाज को पंछी फिर जहाज पर आवै"

(उत्प्रेक्षा अलंकार)

सूरदास की अलंकार योजना की तारीफ हजारीप्रसाद द्विवेदी ने भी की है, वे कहते हैं – "जब सूर काव्य रचना करने चलते हैं तो उपमाओं की बाढ़ आ जाती है तथा अलंकारशास्त्र हाथ जोड़कर उनके पीछे पीछे चलता प्रतीत होता है।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'राम की शक्तिपूजा' में निहित द्वंद्वात्मकता का उद्घाटन करते हुए उसके महत्त्व का निरूपण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

राम की शक्ति पूजा में घटनाओं व चरित्रों के स्तर पर पर्याप्त द्वंद्वात्मकता विद्यमान है।

'रवि डुबा अस्त' से प्रारम्भ हुई रचना की शुरुआत की 18 पंक्तियों में राम की सेना हार रही है। सानु सभा के दौरान अचानक राम के हृदय में सीता की स्मृति जाग उठती है तथा विश्वविजयभावना भर आती है।

लेकिन इसके तुरंत बाद ही राम को भीमा की मूर्ति दिखायी देती है, जिसने रावण को अंक में लिया हुआ है। इससे राम की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

विजय भावना निराशा व शोक में बदल जाती है।

हनुमान जी भी शक्ति को हराने के लिए तीव्र वेग व विजय भावना से जाते हैं परंतु सफल नहीं हो पाते हैं। दरअसल द्वन्द्व यह है कि "अन्याय जिधर है उधर शक्ति"

यही द्वन्द्व आगे बढ़ता है तथा राम जब शक्ति की मौलिक कल्पना करने के लिए पूजा करते हैं तो अंतिम पुष्प को दुर्गा ले जाती हैं तथा माहौल फिर नैराश्यपूर्ण हो जाता है लेकिन राजीवनयन अपनी आँख को समर्पित करने का निश्चय करते हैं तो द्वन्द्व अपने चरम पर पहुँच जाता है तथा "होगी जय, होगी जय" की जयनाद होने

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

लगती है।)

इस कविता में द्वन्द्वात्मकता का महत्व कई स्तरों पर है। इसने कविता को चलचित्र के रूप में प्रस्तुत कर दिया है तथा युद्ध वर्णन, सानुसभा से लेकर शक्ति पूजा को देख लेने का अनुभव पाठक को मिल पाता है।)

द्वन्द्वात्मकता के कारण रचना में नाटकियता व रंगमंचीयता की संभावना भी उभर गई है। वैसे भी किसी रचना के सफल मंचन के लिए द्वन्द्वात्मकता का होना प्राथमिक शर्त होती है इससे नायक का कथानक वक्रीयता प्राप्त करता है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तथा पाठक को रोमांच व जिज्ञासा महसूस होती है।

द्वन्द्वात्मकता के कारण राम जी के आंतरिक चरित्र का उद्घाटन भी सरल हो पाया है तथा उनमें सीता प्रेम, पराजय बोध, शोक आदि को उभारा जा सका है।

द्वन्द्वात्मकता के कारण कविता के अन्य अर्थ भी संभव हुए हैं जिससे यह स्वाधीनता आंदोलन की अभिव्यक्ति, निराला की स्वयं की व्यथा तथा नारी मुक्ति को भी समाहित करती है।

कहा जा सकता है कि कविता की द्वन्द्वात्मकता ने रचना को अधिक प्राणवान व सृजनशील बनाया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'कुरुक्षेत्र' के काव्य-शिल्प पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

दिनकर मार्क्सवादी रचनाकार हैं तथा मार्क्सवादी रचनाकार कथ्य की अपेक्षा शिल्प को गौण महत्व देते हैं परंतु दिनकर ने कुरुक्षेत्र में शिल्प को भी पर्याप्त महत्व दिया है।

काव्यरूप :- कुरुक्षेत्र के काव्यरूप को लेकर विवाद है। कुछ विद्वान इसे प्रबंधकाव्य तथा महाकाव्य कहते हैं तो अन्य इसे मुक्तक व लंबी कविता की श्रेणी में रखते हैं। लंबाई के कारण इसे मुक्तक नहीं कहा जा सकता तथा इसमें कारण-कार्य व

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

घटनाओं, कथा में वह सुसंगतता नहीं है कि इसे प्रबंध काव्य कहा जाए।

दरअसल इसका काव्यरूप को लंबी कविता माना जा सकता है जो युद्ध दर्शन पर विश्लेषण करने के कारण लंबी हो गई है।

भाषा:- मुख्यत: तो तत्समबहुला शब्दावली का प्रयोग किया गया है लेकिन तद्भव व विदेशज-देशज शब्दावली भी मिल जाती है। तत्सम का उदाहरण—

"छीनता हो स्वत्व कोई और तू,
तप त्याग से काम ले यह पाप है।"

छंद:- दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैया जैसे पारम्परिक छंदों को नहीं रखा गया है। दरअसल इसमें छंदों के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

निर्वाह का ध्यान नहीं रखा गया है लेकिन तुकांतता का निर्वाह दिखाई देता है।

अलंकार :- अलंकारों का कम प्रयोग किया है, जहाँ अलंकार प्रयोग हुए है वहाँ भी अर्थालंकारों को महत्व दिया गया है। विशेष रूप से विज्ञान व मानवता के विमर्श में अर्थालंकारों का अधिक प्रयोग हुआ है।

प्रतीक योजना का कुरुक्षेत्र में कम प्रयोग हुआ। स्पष्टतः कहा जा सकता है कि कुरुक्षेत्र 'काव्य शिल्प' श्रेष्ठ व सुंदर है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) आपके मत से कबीर और तुलसी में किसे 'लोकनायक' की संज्ञा देना अधिक उचित होगा? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

लोकनायक की संज्ञा दोनों में से उसी कवि को दी जा सकती है जिसके काव्य में लोक के प्रति प्रतिबद्धता अधिक हो।

कबीर व तुलसी दोनों का काव्य ही सघनता से लोक से जुड़ा है। कबीर शोषित, पीड़ित तथा अपमानित व्यक्तियों के दुःखों को उसे वे तथा शास्त्रों, वर्णों व धार्मिक व्यवस्था पर चोट करके लोक से जुड़ने का अहसास करते वे। कबीर ने अभिजात्य भाषा के स्थान पर लोक की भाषा में ही अपने काव्य को अभिव्यक्त किया। वे

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कहते हैं—

"कूपजल है संस्कृत, भाखा बहता नीर"

लेकिन कबीर ने सामाजिक कुटिलताओं पर केवल चोट की। आर्थिक व राजनीतिक पक्ष उनके काव्य से नदारद हैं।

दूसरी ओर यदि तुलसी के काव्य को देखें तो उसमें राजनीति-आर्थिक-सामाजिक सभी पक्षों को समाहित किया है। जैसे-

"जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी, सो नृप अवश्य नरक अधिकारी।"
(राजनीतिक बोध)

"खेती न किसान को भिखारी को न भीख बलि"
(आर्थिक बोध)

"परहित सरिस धर्म नहीं भाई, परपीड़ा सम नहीं अधमाई"
(सामाजिक बोध)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तुलसीदास ने कवितावली के उत्तरकांड में समाज के पिछड़ने का सघन विश्लेषण करते हुए कलियुग का चित्रण किया है तथा लोगों को 'रामराज्य' का विकल्प भी प्रस्तुत किया है जहाँ सभी सुख होंगे। जैसे —

दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराज्य काहुहि नहिं व्यापा।"

सांस्कृतिक उत्कर्ष की दृष्टि से भी तुलसी के रामचरितमानस का पाठ भारत तथा विदेशों में होता है। तुलसी ने वर्णों तथा धार्मिक मान्यताओं में समन्वय का प्रयास भी किया।

अतः कबीर की अपेक्षा तुलसी का काव्य लोक से अधिक वैविध्य से जुड़ा है इसलिए तुलसीदास को लोकनायक की संज्ञा देना अधिक उचित होगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) असाध्य वीणा 'मौन से स्वर' और 'स्वर से मौन' की यात्रा है। इस मत के परिप्रेक्ष्य में असाध्य वीणा की अंतर्वस्तु का विश्लेषण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित गद्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: 10 × 5 = 50

(क) बिलैती कपड़ा के पिकेटिंग के जमाने में चानमल-सागरमल के गोला पर पिकेटिंग के दिन क्या हुआ था, सो याद है तुमको बालदेव? चानमल मड़बाड़ी के बेटा सागरमल ने अपने हाथों सभी भोलटियरों को पीटा था; जेहल में भोलटियरों को रखने के लिये सरकार को खर्चा दिया था। वही सागरमल आज नरपतनगर थाना कांग्रेस का सभापति है।

~~मार्क्सवादी साहित्यकार यशपाल~~

फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा रचित उपन्यास 'मैला आँचल' में तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों का सघन चित्रण किया गया है। 1942 से 1952 के आसपास किस प्रकार से राजनीति का अपराधीकरण हो रहा था; इसे चलितकर्मकार, कापड़ा जैसे चरित्रों के माध्यम से दिखाया गया है।

जिस सागरमल ने स्वतंत्रता संग्राम में कार्यरत वालंटियरों पर जुल्म किए तथा पुलिस का साथ स्वतंत्रता

दृष्टि The Vision

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सेनानियों के दमन में दिया आज वही सागरमल कांग्रेस का सभापति बन गया है।

विशेष

① इसी प्रकार मन्नू भण्डारी ने महाभोज में दा साहब, जोरावर के माध्यम से राजनीतिक विकृतियों को दिखाया है।

② 17वीं लोकसभा में 43% सांसदों पर आपराधिक मुकदमें दर्ज हैं अतः यही प्रवृत्ति वर्तमान में विद्यमान है।

③ भाषायी प्रयोग रेणु की विशेषता रही है, जो यहाँ भी दृष्टव्य है, जैसे-

वालन्टियरें - भोलटियरें।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) तुम्हारे दुख की बात भी जानती हूँ। फिर भी मुझे अपराध का अनुभव नहीं होता। मैंने भावना में एक भावना का वरण किया है। मेरे लिये वह संबंध और सब संबंधों से बड़ा है। मैं वास्तव में अपनी भावना से प्रेम करती हूँ जो पवित्र है, कोमल है, अनश्वर है...।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मल्लिका के चरित्र के माध्यम से प्रेम में एकनिष्ठता तथा आसक्ता को दिखाया गया है। 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में 'मोहन राकेश' ने मल्लिका-अंबिका के मध्य वार्तालाप में भावना व अनुभव के द्वन्द्व को उभारा है।

अंबिका के दुख की बात को जानकर भी मल्लिका अपनी भावनाओं से कालिदास को अलग नहीं कर पाती है। मल्लिका यथार्थ से आँखे मूँदकर भावनाओं के स्तर पर ही जीवन यापन करना चाहती है और

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इसका उसे कोई पछतावा भी नहीं है।

विशेष

① ऐतिहासिक आवरण को बनाए रखने के लिए तत्सम्-तद्भव शब्दावली का प्रयोग हुआ है।

② यथार्थ की आँच को अनुभव ना कर पाने के कारण मल्लिका को वाग्दत्ता बनना पड़ा है।

③ मल्लिका का एकनिष्ठ व भावुक प्रेम पाठकों के हृदय पर अमिट छाप छोड़ता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अधिकार-सुख कितना मादक और सारहीन है। अपने को नियामक और कर्त्ता समझने की बलवती स्पृहा उससे बेगार कराती है। उत्सवों में परिचारक और अस्त्रों में ढाल से भी- अधिकार लोलुप मनुष्य क्या अच्छे हैं? उंह। जो कुछ हो, हम साम्राज्य के एक सैनिक हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

जयशंकर प्रसाद राष्ट्रीय-सांस्कृतिक जागरण के प्रेरणास्रोत माने जाते हैं। उनके नाटक 'स्कंदगुप्त' के आरम्भ में चित्रित इन पंक्तियों में स्कंदगुप्त साम्राज्य प्राप्ति व अधिकार सुखों के प्रति अनिच्छा प्रकट करता है।

स्वयं को ही कर्तव्यर्ता समझने की इच्छा ही मनुष्यों से अथक परिश्रम कराती है तथा मनुष्य अधिकारों की प्राप्ति के लिए सुखों से दूर होता जाता है।

स्कंदगुप्त की इस सोच पर आगे पर्णदत्त निराशा प्रकट करता है तथा स्कंदगुप्त से साम्राज्य का

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उत्तराधिकार स्वीकार करने की इच्छा प्रकट करता है।

विश्लेषण

① इन पंक्तियों में प्रसाद का 'प्रत्यभिज्ञा दर्शन' दिखता है।

② अन्य भी स्कंदगुप्त ने ऐसे कथन कहे हैं, जैसे –

'वह जीवन बेकार है, जिसके लिए रात-दिन लड़ना पड़े।'

③ भाषा तत्समबहुला खड़ी बोली है जो बोधगम्यता की दृष्टि से सहज-सरल है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) जीवन में एक समय प्रयत्न की असफलता मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन नहीं है। जीवन का हम अन्त नहीं देख पाते, वह निस्सीम है। वैसे ही मनुष्य का प्रयत्न और चेष्टा भी सीमित क्यों हो? असामर्थ्य स्वीकार करने का अर्थ है, जीवन में प्रयत्नहीन हो जाना, जीवन से उपराम हो जाना।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

मार्क्सवादी साहित्यकार 'यशपाल' ने 'दिव्या' उपन्यास में मानववादी विचारों को प्रस्तुत किया है। मॉरिश के माध्यम से दिव्या में जीवनेच्छा जगाने का प्रयत्न किया जा रहा है।

मॉरिश कहता है कि पृथुसेन प्राप्ति की असफलता को अंतिम असफलता नहीं माना जा सकता है। हे दिव्या! जीवन में अनेक अवसरों पर सफलता - असफलता मिलती रहती है लेकिन मनुष्य अपने प्रयत्न व चेष्टाओं के बल पर अनेक असफलताओं के मार्ग को पार

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

करके निरंतर प्रयत्नशील रहता है। असफलता स्वीकार करने से व्यक्ति प्रयत्नहीन व जड़ बन जायगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

① ऐतिहासिक आवरण के लिए भाषा तत्समबहुला रखी गई है।

② असफलताओं के कारण वर्तमान में बढ़ी आत्महत्याओं की प्रवृत्ति को रोकने में ऐसी पंक्तियाँ सहायक हो सकती हैं।

③ अन्य भी यशपाल मनुष्य की शक्ति में गहरा विश्वास व्यक्त किया है, जैसे —

"मनुष्य भोक्ता नहीं करता है। सम्पूर्ण माया मनुष्य की क्रीड़ा है।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) कोई पीछे नहीं है, यह बात मुझमें एक अजीब किस्म की बेफिक्री पैदा कर देती है। लेकिन कुछ लोगों की मौत अन्त तक पहेली बनी रही है; शायद वे जिन्दगी से बहुत उम्मीद लगाते थे। उसे ट्रैजिक भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि आखिरी दम तक उन्हें मरने का अहसास नहीं होता।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नई कहानियों के कथ्य-मध्यवर्गीय जीवन, शहरी कथा तथा व्यक्तिवाद से अलग पथ चुनते हुए 'अमरकांत' ने 'जिन्दगी और जोंक' कहानी में 'रजुआ' के माध्यम से वंचित वर्ग के शोषण की अभिव्यक्ति की है।

उपर्युक्त कथन कहानी के चरित्र 'मैं' द्वारा कहा गया है। रजुआ की मौत 'मैं' से किसी को पीड़ा नहीं हुई बल्कि लोगों में बेफिक्री पैदा की। 'मैं' को रजुआ की मृत्यु का केवल समाचार मिला है वह अभी रजुआ की मृत्यु को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लेकर निश्चित नहीं है क्योंकि रजुआ में जीवनेच्छा दृढ़ है तथा वह जिन्दगी से जोंक की तरह चिपटा हुआ है।

विशेष

1. यहाँ फ्रायड की 'कामभावना' से आगे बढ़कर 'जीवनेच्छा' को प्रस्तुत किया गया है।

2. बुलको बन्नो, भोलाराम का जीव, चीफ की दावत जैसी कुछ ही नई कहानियों की तरह इस कहानी में भी सामाजिक समस्या को उठाया गया है।

3. भाषा की सहजता पर बल। 'ट्रेनिंग' जैसे अंग्रेजी शब्द प्रयोग भी हुए हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) क्या आप कतिपय आलोचकों के इस मत से सहमति रखते हैं कि गोदान मनुष्यों की नहीं मनुष्य की कथा है? अपना मत प्रकट करते हुए होरी की चारित्रिक विशेषताओं को रेखांकित कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गोदान एकसाथ कई संदर्भों को समेटने वाली कथा है। कभी यह किसान की कथा के रूप में उभरती है तो कभी सभी मनुष्यों की अपने-अपने तरीके से कथा कहती है।

हालाँकि कुछ आलोचक इसे सभी मनुष्यों की कथा के रूप में नहीं स्वीकारते तथा इसे केवल होरी की कथा ही कहते हैं।

इन्होंने होरी को वर्गमत चरित्र न मानकर व्यक्तिगत विशेषताओं से सम्पन्न चरित्र माना है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishti1AS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

यदि होरी को वर्गमत चरित्र माने तो गोदान मनुष्यों की कथा बन जायगी क्योंकि होरी जिस मरजाद, बिरादरी, ऋण, बेगारी से ग्रस्त है वैसी समस्याएँ आज भी भारत के अनेक लोगों को थोड़े बहुत बदले हुए रूप में घेरे हुए हैं।

अनेक स्थानों पर आज भी प्रेमी युगल के माता-पिता को पंचायतों के द्वारा गोदान की पंचायत की तरह ही अपमानित किया जा रहा है। गोबर की तरह मजदूर कोलाहल व थकान से पीड़ित हैं। मालती महता की तरह शहरी लोग गाँव को मैलानी भाव से देखते हैं। इस दृष्टि से यह रचना मनुष्य की नहीं मनुष्यों की

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

क्या लगती है।

लेकिन होरी के चरित्र में कई ऐसी विशेषताएँ हैं जो गोदान को मनुष्य की कथा सिद्ध करती हैं।

होरी में गाय की लालसा बहुत अधिक है जिसने उसके जीवन को दारुण, दरिद्र बनाकर मृत्यु निश्चित की है। ऐसी विशेषताएँ अधिकांश मनुष्यों में नहीं मिलती हैं।

होरी का समझौतावादी चरित्र।

इस कारण वह थानेदार, पंचायत, रायसाहब, आदि से समझौता करने हेतु तैयार रहता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

होरी बिरादरी व मरजाद को बहुत अधिक महत्व देता है जबकि अधिकांश व्यक्ति बिरादरी व मरजाद के लिए मृत्यु के शिकार नहीं हो सकते हैं।

फिर भी समग्र विश्लेषण के माध्यम से गोदान को केवल मनुष्य की नहीं बल्कि मनुष्यों की कथा कहना अधिक उचित होगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'भारत-दुर्दशा' नाटक के रचना-उद्देश्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

भारत-दुर्दशा नाटक का मुख्य उद्देश्य नवजागरण की चेतना का प्रसार करना रहा है। अतीत की महानता, वर्तमान की दुर्दशा तथा भविष्य के लिए दिए गए संकेतों के माध्यम से यह स्पष्ट भी हो जाता है।

नवजागरण के लिए यह आवश्यक होता है कि अतीत से रचनात्मक ऊर्जा प्राप्त की जा सके ताकि लोगों को महसूस कराया जा सके की अतीत में हम श्रेष्ठ थे। ऐसे वर्णन इस नाटक में भी है, जैसे -

"सबके पहिले जेहि सभ्य विधाता कीनो
सबके पहिले जेहि धन-बल दीनो।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नवजागरण के लिए यह भी आवश्यक होता है कि वर्तमान दुर्दशा के कारणों का तटस्थ मूल्यांकन किया जाए।

भारत-दुर्दशा में भारत की दुर्दशा के लिए आदर्श कारणों (अंग्रेज राज, धन बहिर्गमन, टैक्स) के साथ औपनिवेशिक कारणों (धर्म, आलस्य, मदिरा, वर्णव्यवस्था, अज्ञानता) पर भी समग्र चिंता व्यक्त की गई है।

नारक में भारत की दुर्दशा के प्रति वेदना का भाव है तथा सभी से दुर्दशा के कारणों पर विचार करने के लिए कहा गया है, जैसे –

"रोवहु आवहु मिलिकै सब भारत भाई
भारत-दुर्दशा न देखी जाई।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस नाटक में उस बुद्धिवादी वर्ग के कार्यों का भी विश्लेषण किया गया है जो भारत के उद्धार के लिए सक्रिय है।

कवि जहाँ चूड़िया पहनने की बात करता है तथा दूसरा देशी डर के मारे मेज के नीचे ~~दुबक~~ छिप जाता है।

नाटक के माध्यम से अंग्रेजी राज की स्वेच्छाचारिता (डिसलोयल्टी एक्ट), टैक्स, ~~धन~~ धन बहिर्गमन को भी उजागर किया गया है।

पहले देशी के माध्यम से भविष्य के संकेत देना भी उद्देश्य रहा है जैसे पहला देशी कहता है— "हाय! कोई मत नहीं चाहता कि सब एकचित हों, कला सीखें, विद्या की उन्नति करें। क्रमशः सब ठीक हो जायगा।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) "महाभोज' में चित्रित यथार्थ आदर्शोन्मुख यथार्थ है।' इस मत के संदर्भ में 'महाभोज' उपन्यास पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

आदर्शोन्मुख यथार्थ वाली रचनाओं में रचना की शुरुआत चरम यथार्थ से की जाती है लेकिन अंत में आदर्श हावी हो जाता है तथा रचना में ही समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर दिया जाता है।

प्रेमचंद की बूढ़ी काकी, बड़े घर की बेटी कहानियों तथा सेवा सदन, निर्मला जैसे उपन्यासों में आदर्शोन्मुख यथार्थवाद देखा जा सकता है।

महाभोज में भी आदर्शोन्मुख यथार्थवाद के कई संकेत मिलते हैं। प्रारम्भ में 'बिसु की मौत', सरोहा के चुनावों में जातिगत समीकरण, आनेदार

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का ग्रामीणों पर शोषण, जोशवर के द्वारा हरिजन टोले में आग लगा देना तथा दत्ता बाबू के माध्यम से पत्रकारिता का बिकाऊ होना; ये सभी - ऐसे प्रसंग हैं जो यथार्थवाद को व्यक्त करते हैं।

चुनावों में धनबल का प्रयोग, दल-बदल, हिंसा, बुद्धिजीवियों का अखबार पढ़ने के दौरान बिसु की मौत तथा हरिजनों के अत्याचार के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण विकसित होते हुए न दिखना। जाना मधुभोज को यथार्थवादी रचना बनाते हैं।

लेकिन आदर्शवाद के भी कई प्रसंग मिल जाते हैं। बिसु के बाद बिंदा

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

में आया परिवर्तन तथा बिंदा की गिरफ्तारी के बाद एसपी सक्सेना का व्यक्तित्वांतरण आदर्शोन्मुख यथार्थवाद को प्रमाणित करते हैं।

अंत में लखन भैया के हृदय में भी दल-बदल की विकृत राजनीति के प्रति परिवर्तन को दिखाया गया है। वे कहते हैं—

"क्या इसी क्रांति का सपना देखा था।"

कहा जा सकता है कि अंत में कई चीजों में आया बदलाव इस रचना को सहज यथार्थवादी के स्थान पर आदर्शोन्मुख यथार्थवादी रचना होने की पुष्टि करता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) भारत के संपूर्ण गाँवों का प्रतिनिधित्व करता 'मेरीगंज' जिस रूप में 'मैला आँचल' में व्यक्त हुआ है, वह रूप गांवों की नारकीय स्थिति और जन-चेतना के दुष्प्रभावों का कलात्मक यथार्थ है।' इस मत के परिप्रेक्ष्य में 'मैला आँचल' उपन्यास का परीक्षण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation